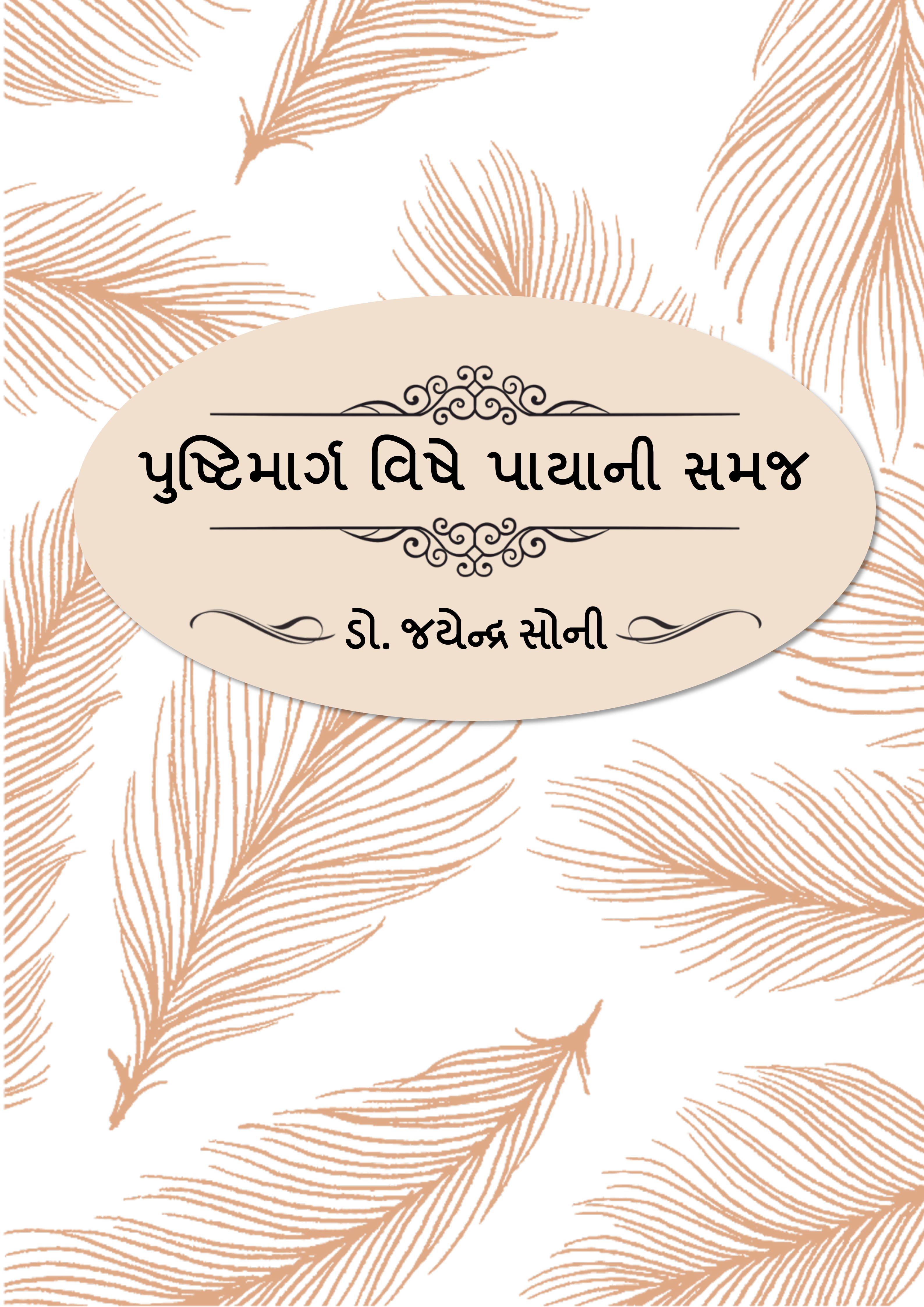

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ

ડો. જયેન્દ્ર સોની

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ

(*"પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ

शास्त्र समझावे छे के सृष्टिनी उत्पत्ति भगवाने पोतानी लीला - आनंदने माणवा माटे करी छे. तदर्थ तेमणे विभिन्न प्रकारनी जीवसृष्टि - दैवी अने आसुरी उत्पन्न करी छे. तेने ज श्रीमहाप्रभुजी पुष्टि-मर्यादा-प्रवाही तरीके ओलखावे छे. प्रवाही सृष्टिने जीवनना मोजशोख माणवामां रुचि होय छे, तेथी तेओ प्रलय पर्यंत एक पछी बीजी योनिओमां भम्या करे छे. मर्यादा जीवो आध्यात्मिक अभिगमने अपनावे छे अने जन्म-मरणना चकरावामांथी मुक्त थवा शास्त्रोक्त कर्म-ज्ञान-उपासना (मर्यादाभक्ति) ना मार्ग अपनावी मोक्ष प्राप्ति करवामां प्रयत्नशील रहे छे.

पुष्टिमार्गना प्रणेता महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीए समजाव्यु छे के 'पुष्टिजीवो' नी उत्पत्ति भगवाने पोतानी सेवा माटे करी छे. तेथी तेमनो सहज प्रेम भगवान प्रत्ये होय छे. तेओनुं लक्ष्य केवल भगवद् प्राप्ति होय, मोक्ष नहिं. भगवान ना स्वरुपनो आनंद प्राप्त करवो, भगवान नी नित्यलीला-प्रवेश एज पुष्टिमार्गमां फल छे. तेथी तेमनी स्वाभाविक रुचि भगवद् गुणगान तथा भगवद् सेवामां होय छे. तेमने पोषण आपी भगवान नी कृपा नो अनुभव करावावा माटे श्रीमहाप्रभुजीए शास्त्रोक्त मर्यादा भक्ति थी विलक्षण 'पृथक शरणमार्ग' - 'पुष्टिभक्तिमार्ग' प्रवर्तित कर्यो छे.

आवो, तेना विशे मूलभूत बाबतोथी अवगत थईए ! (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧)

'पुष्टिभक्तिमार्ग' जे सामान्यतः 'पुष्टिमार्ग' ना नामे ओलखाय छे, ते भगवानना स्वयंनी कृपा द्वारा भगवान ने प्राप्त करवानो मार्ग छे. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨)

पुष्टिभक्तिमार्गमां परम फल केवल 'भगवान श्रीकृष्ण' छे केमके तेओ 'सदानंद', परमतत्त्व छे. "कृष्णस्तु भगवान स्वयं", भागवत कहे छे. "परंब्रह्म तु कृष्णो हि", (सि.मु.) श्रीमहाप्रभुजी समझावे छे. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૩)

साचा अर्थमां 'पुष्टिमार्गीय वैष्णव' ते छे जे स्वीकारे छे के _ १. तेना गुरु एकमात्र महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी ज छे, कारणके तेमणे ज वेदादि शास्त्रोना प्रमाणोनी एकवाक्यताना आधारे 'शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद' नी दार्शनिक

विचारधारा प्रतिपादित करी, तदंतर्गत् 'पुष्टिभक्तिमार्ग' प्रवर्तित कर्यो छे. २. पुष्टिमार्गने अनुसरवा माटे आपश्री द्वारा ग्रंथस्थ सिद्धांतों एवम् श्रीगुसांईजी आदि पूर्वाचार्योना ग्रंथो ज प्रमाण-वचनों छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૪)

श्रीवल्लभकुल आचार्यो 'गुरुद्वार' छे (श्रीपुरुषोत्तमजी) . तेमनामां श्रीवल्लभवत् भाव राखी तेमना दर्शन-चरणस्पर्श करवा जोईए. निबंध मां निर्दिष्ठ गुरुना लक्षणों _ 'कृष्णसेवा परायण, दंभादिरहित, भागवत-तत्वज्ञ' (स.नि. का.२२७) तेमनामां अपेक्षित छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૫)

श्रीमहाप्रभुजीनी आज्ञा - "शास्त्रोने सारीरीते जाणी-समजीने मन-वचन-देहथी कृष्णसेवा करवी" ((शा.प्र.) ने गंभीरतापूर्वक स्वीकारी आपश्री एवम् पूर्वाचार्यों ना ग्रंथोनुं अध्ययन मननपूर्वक करवुं जरूरी छे, अन्यथा गेरमार्गे दोराई जवानी संभावना रहेली छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૬)

"कृष्णसेवा सदाकार्या" ने श्रीमहाप्रभुजीए 'स्वसिद्धांत' कह्यो छे. (सि.मु.). "सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधीप, स्वस्यायमेव धर्मो हि नान्यक्वापि कदाचन" (चतु:श्लोकी), अर्थात् 'व्रजाधिप कृष्णने भजवा' ते पुष्टिजीवनो एकमात्र धर्म - कर्तव्य छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૭)

भक्ति, शरणागति, समर्पण अने सेवा पुष्टिमार्गने अनुसरवाना अनिवार्य अंग छे. आ चार बाबतोंने सारी रीते समजीने निष्ठापूर्वक तेने अपनाव्या विना पुष्टिमार्गनुं अनुसरण थई शके नहीं. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૮)

'भक्ति' नो सादो अर्थ छे -भगवानमां निश्वार्थ उत्कट प्रेम. तेनुं तात्पर्य छे - 'भगवानना माहात्म्यनुं ज्ञान' अने 'भगवान प्रत्ये सुदृढ़ तेमज सर्वथी अधिक स्नेह' होवा. आ बन्ने भक्तिना आवश्यक अंग छे. माहात्म्य ज्ञानथी भगवान नी शरणागति सिद्ध थशे, अने भगवानमां स्नेहना कारणे आपणे तेमने सर्वस्वनुं समर्पण करवा तत्पर बनीशुं. सेवा आपणी भक्ति - प्रेमनी अभिव्यक्ति छे, दासभाव सह सहज कर्तव्य छे, समर्पण नी सार्थकता छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૯)

भागवत मां वर्णित नवधाभक्ति 'श्रवण-कीर्तन-स्मरण-पादसेवन-अर्चन-वंदन-दास्य-सख्य-आत्मनिवेदन' प्रत्येक साधन रुपथी 'मर्यादाभक्ति' छे, तेमज ते प्रत्येक 'प्रेमलक्षणाभक्ति' ना अंगभूत छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૦)

हवेलीमां मात्र 'दर्शन' करवा ए भक्ति नथी परंतु प्रभुने एकादश ईन्द्रियोथी माणवानी आज्ञा श्रीमहाप्रभुजीए सुबोधीनीजीमां करी छे. आपणी प्रत्येक इन्द्रियने भगवद् सुखार्थे प्रयोजवानी छे. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૧)

'समर्पित जीवन' पुष्ठिमार्गनुं हार्द छे. 'एकांतिक भक्ति' पुष्टिमार्गनो मर्म छे. ब्रह्मसंबंध करती वखते "कृष्ण तवास्मि" कही आपणे कृष्ण साथेनो 'अलौकिक गृहस्थ धर्म' स्वीकार्यो छे. तेथी तेने निभाववो अनिवार्य गणाय, अन्यथा ते वचनभंग कहेवाय. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૨)

तदर्थ ज श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करे छे - "गृहे स्थित्वा स्वधर्मत:". पोताना धरमां, परिवार साथे सहयोग करी, वर्णाश्रमने निभावता भगवद्सेवा करवी जरुरी छे.(भ.व.). सुबोधिनीजीमां पण आपश्री कहे छे - 'भगवद्सेवा करवा माटे ज घरमां रहेवानुं प्रयोजन छे'. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૩)

शास्त्र निर्दिष्ट आजीविका द्वारा जे पदार्थो सहजपणे प्राप्त थाय तेना द्वारा पोताना स्वामी श्रीकृष्णनी सतोषजनिका भगवद्सेवा करवी जोईए, (स.नि.प्र.) (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૪)

श्रीमहाप्रभुजीए 'तनु-वित्तजा' अर्थात् पोताना देह तथा पोतानी सत्ताना पदार्थो (द्रव्यादि) थी सेवा करवानी आज्ञा करी छे, जेथी आपणी 'अहंता-ममता' नो प्रभु माटे विनियोग थाय अने तेना कारणे उद्भवतो संसार निवृत्त थई जाय अर्थात् ते बाधा करें नहीं. (सि.मु.) (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૫)

पोताना घरमां पोताना सेव्य श्रीकृष्णनी 'तनु-वित्तजा सेवा' करवाथी तेमनी साथे आत्मिय संबंध स्थापित थशे, अने तेमनामां क्रमश: प्रेम अने आसक्ति उत्पन्न थई अंतमां व्यसन दशामां परिणमित थतां चित्त प्रभुमां जोडाई जशे. ते अवस्थाने 'मानसी सेवा' कही छे, जे 'फलरुप' छे. माटे ज श्रीमहाप्रभुजी कहे छे -"चेतस्तत् प्रर्वतन सेवा, मानसी सा परामता" (सि.मु.) (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૬)

श्रीमहाप्रभुजी ''कृष्णसेवा सदा कार्या'' एम आज्ञा करे छे. तेनुं तात्पर्य छे - 'आपणा जीवननी प्रत्येक प्रवृत्ति नुं केन्द्रबिन्दु आपणा 'सेव्य श्रीकृष्ण' होवा जोईए, आपणी समग्र क्रियाओ मात्र तेमना प्रीत्यर्थे - सुखार्थे ज होवी जोईए. तेथी आपणुं चित्त सदा कृष्ण साथे जोडायेलुं रहे. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૭)

भगवद्सेवा करवामां बाधक सहजादि दोषो नी निवृत्ति माटे गुरु द्वारा 'निवेदन' (ब्रह्मसंबध) मंत्रनी दीक्षा लेवी आवश्यक छे. तेमज दीक्षा लीधा पछी सेव्य श्रीकृष्ण ने पोताना घरमां पधरावी अनन्यभावथी तेमनी सेवा करवी पुष्टिजीवननी अनिवार्यता छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૮)

ब्रह्मसंबंध करती वेलाए केमके आपणे आत्मा सहित आपणी मानेली प्रत्येक वस्तुओनुं समर्पण श्रीकृष्ण ने करवानो संकल्प करीए छीए, एटले ते सर्वनो विनियोग करवो आवश्यक छे, अन्यथा समर्पण निरर्थक गणाशे. तेथीज श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करे छे - "निवेदिभी: समर्प्यैव सर्वं कुर्यादिती स्थिति" (सि.र.) (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૧૯)

'समर्पण' कर्या पछी पोताना जीवन-निर्वाह भाटे असमर्पित पदार्थों नो उपयोग वर्ज्य छे. "असमर्पित वस्तुनां तस्माद्वर्जनमाचरेत" (सि.र.), तेथी जीवन निर्वाहनो उपाय बताव्यो छे - समर्पण करेला सर्वे पदार्थोनो प्रथम विनियोग करावी तेना द्वारा पोतानो निभाव करवो - जेम लोक मां स्वामीना उपयोग मां लीधेला पदार्थोथी सेवकनो निभाव थाय छे. "सेवकानां यथा लोके व्यवहार प्रसिध्यति" (सि.र.) (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૦)

'भक्ति' कोई कारण / संयोगवशात् शक्य न हो तो तेनो विकल्प 'प्रपत्ति' अर्थात् 'शरणागति' बताव्यो छे. तेने माटे 'नाम मंत्र' (अष्टाक्षर) नी दीक्षा गुरु पासेथी लेवी जोईए. अनन्यतापूर्वक श्रीकृष्ण नी शरणागति स्वीकारवाथी पण आपणो उद्धार थई शके छे. भगवान स्वयं आज्ञा करे छे - "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्ष ईष्यामि मां शुच" (गीता). भगवान ना चरण या शरण खुद पोतानामां 'मार्ग' पण छे अने 'गंतव्य' पण छे. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૧)

'भक्ति' तेमज 'शरणागति' बन्नेमां 'अनन्यता' आवश्यक छे. 'अनन्यभाव' एटले 'कृष्ण सिवाय कोई बीजा देवताओ विशे के कोई लौकिक वस्तु अथवा व्यक्ति विशे आश्रय तथा पुष्टिमार्गीय फलथी जुदा कोई फल विशे आपणा ह्रदयमां रुचि के भाव न होवो'. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૨)

तदर्थ 'अन्याश्रय' ने पुष्टिमार्गमां महाबाधक मानवामां आव्यो छे. तेथी बीजा कोई देवनुं भजन अथवा तेमनी पासे जवानुं अथवा तेमनी प्रार्थना करवानुं वगेरे- श्रीकृष्ण ना आश्रय सिवायनुं बीजुं बधु छोडी देवुं जोईए. श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करे छे - "अन्यस्य भजनं तत्र स्वतो गमनमेव च, प्रार्थनाकार्यमात्रेपि ततोन्यत्र विवर्जयेत्" (विवेकधैर्याश्रय). (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૩)

भगवान सर्वज्ञ होवा थी भक्तनी परिस्थिति थी संपुर्णपणे ज्ञात होय छे, तेथी पुष्टिजीवे कोईपण परिस्थितिमां अथवा वस्तु माटे प्रार्थना करवानी आवश्यकता न होय, करवी जोईए नहीं. (ડો. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૪)

पुष्टिजीवे अहंकार रहित थई, सादगीपूर्ण जीवननी आवश्यकताओ जुटावी, अनासक्त भावथी, पोताने भगवाननी लीलानुं एक पात्र समजीने, तेमनी प्रसन्नता माटे, यथासंभव वर्णाश्रम-धर्मनो निभाव करतां जीवन व्यतित करवुं जोईए. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૫)

असदालाप, असमर्पित, अन्याश्रय अने दु:संग नो त्याग पुष्टिजीवनी प्राथमिकता होवी जोईए, केम के ते सर्वे बाधारुप छे. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)

પુષ્ટિમાર્ગ વિષે પાયાની સમજ (૨૬)

समर्पित जीवन अर्थात् पोताना सेव्य श्रीकृष्ण साथेनुं सेवामय सहजीवन पुष्टिमार्गनुं हार्द छे, कारणके कृष्ण अलौकिक आनंदनु मूर्त स्वरुप छे. पुष्टिफल प्राप्त करवानी ए सोनेरी चावी छे. (ડૉ. જયેન્દ્ર સોની)